नमाज़े मसनून

लेखक

मौलाना मुख़्तार अहमद नदवी

प्रकाशक

अद्-दारुस्सलफ़िय्या

मुंबई

सल्लू कमा र-ऐतुमूनी उ-सल्ली
(तुम ऐसी पढ़ो, जैसी मुझे पढ़ते देखा है- हदीस)

मसनून नमाज़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
की नमाज़ का सहीह मजमूआ

संपादक
मौलाना मुख़्तार अहमद नदवी

प्रकाशक
अद्दारुस्सलफ़िय्या
मुम्बई -8

सिल्सिला तमबूआत अद्दारुस्सलफ़िय्या न0 213

नाम पुस्तक	**मसनून् नमाज़**
अनुवादक	ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी
संपादक	मौलाना मुख़्तार अहमद नदवी
मुद्रक	अक्रम मुख़्तार
प्रकाशक	अद्दारुस्सलफ़िय्या, मुबंई
संख्या	1100
तिथि	अगस्त **2002**
मूल्य	केवल **RS.20/--** रुपये

D. & S by :

Graphic Time Computers

D. Ganj, New Delhi- 2 Ph: 3250836

मिलने का पता

दारुल मआरिफ़

13, मुहम्मद अली बिल्डिंग, भिंडी बाज़ार

मुंबई न0 3, ☎ 3716288

विषय सूची

कलिम-ए-तौहीद

لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

लाइला-ह इल्लल्लाहु
मु-हम्मदुर्ररसूलुल्लाहि

कलिम-ए-शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्-हदु अल्ला इला-ह
इल्लल्लाहु व-अश्-हदु अन्न
मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू

★★★

प्रकाशक की ओर से

अद्दारुस्सलफ़िय्या की प्रसिद्ध पुस्तक "सलातुन्नबी" का यह संक्षिप्त और सरल एडिशन सरकारी पाठशालाओं और इस्लामी स्कूलों में शिक्षा पाने वाले मुसलमान बच्चों-बच्चियों और आ़म मुसलमानों की ज़रूरत को सामने रख कर तर्तीब दिया गया है।

इस पुस्तक में नमाज़ के तअ़ल्लुक़ से समस्त ज़रूरी मसाइल और दुआ़ओं को इकट्ठा कर दिया गया है और इसे सरल से सरल बनाने की चेष्टा की गयी है। साथ ही हर मस्अला की तहक़ीक़ क़ुरआन व हदीस की रोशनी में की गयी है। इस प्रकार यह पत्रिका (रिसाला) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नमाज का सब से सहीह मजमूआ बन गया है।

अल्लाह तआ़ल संपादक की इस दीनी चेष्टा को क़ुबूल फ़रमाये और इसके द्वारा मुसलमानों को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये -आमीन!

अक्रम मुख़्तार

अद्दारुस्सलफ़िय्या मुम्बई

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इस्लाम के अर्कान

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर स्थापित (क़ाइम) है।

اَشۡهَدُ اَنۡ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ

अश्-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू

तर्जुमा : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस के बन्द और रसूल (संदेष्टा) है।"

2. दिन और रात में पाँच समय की नामज़ अदा करना।

3. ज़क़ात अदा करना।

4. रमज़ान के पवित्र महीने के रोज़े रखना।

5. अगर ख़र्च करने की ताक़त हो तो बैतुल्लाह शरीफ़ का हज्ज करना (*मुस्लिम शरीफ़*)

नमाज़

नमाज़, दिन और रात में पाँच समय फ़र्ज़ है।

(1)जुह्र (2)अ़स्र (3)मग़्रिब (4)इशा (5)फ़ज्र

जुह्र और अ़स्र दिन की नमाज़ें हैं, मग़्रिब और इशा रात की नमाज़ें हैं और फ़ज्र सुब्ह की नमाज़ है।

नमाज़ की रक्अ़तों की संख्या

1- **फ़ज्र की नमाज़** : पहले दो सुन्नतें, फिर दो फ़र्ज़

2- **जुह्र की नमाज़** : पहले दो अथवा चार सुन्नतें, फिर चार फर्ज़, फिर दो सुन्नतें।

3- **अ़स्र की नमाज़** : चार फर्ज़ ।

4- **मग़्रिब की नमाज़** : तीन फर्ज़, दो सुन्नतें।

5- **अ़िशा की नमाज़** : चार फ़र्ज़, दो सुन्नतें,

एक अथवा तीन रक्अ़त वित्र।

✪ दिन और रात की फ़र्ज़ नामज़ों की संख्या 17 रक्अ़तें, और सुन्नतें 10 या 12 रक्अ़त। और वित्र एक या तीन रक्अ़त।

वुज़ू का तरीक़ा

✪ वुज़ू के बग़ैर नमाज़ नही होती। (*मुस्लिम*)

✪ वुजु के आरंभ में "बिस्मिल्लाह" कहना अनिवार्य है।

✪ बिस्मिल्लाह कहने के बाद तीन बार दोनों हाथ पहुँचों तक धोयें।

✪ फिर एक चुल्लू पानी लेकर आधे से कुल्ली करें और आधा नाक में डालें। (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

✪ नाक को बायें हाथ से साफ़ करें (इसी प्रकार तीन बार करें) (*नसई*)

✪ फिर तीन मर्तबा मुँह धोयें। और मुँह धोने की हालत में पानी लेकर उसे ठोड़ी के नीचे दाख़िल कर के दाढ़ी का ख़िलाल करें। (*अबू दावूद*)

✪ फिर अपना दाहिना हाथ कोहनी तक तीन बार धोयें। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ फिर हाथ की उंगिलयों का ख़िलाल करें। *(अबू दावूद)*

✪ अगर अँगूठी पहने हों तो उस को हिला लें *(बैहक़ी, मसाइले अहमद, लि-अबी दावूद)*

✪ फिर सर का मसह इस प्रकार करें कि दोनों हाथ को सर के अगले हिस्सा से शुरू कर के गुद्दी तक ले जायें। फिर वहाँ से उसी स्थान पर वापस ले जायें, जहाँ से आरंभ किया था। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ फिर कानों का मसह इस प्रकार करें कि शहादत की दोनों उँगलियाँ दोनों कानों के सूराखों में डाल कर कानों की पीठ पर अँगूठों के साथ मसह करें। *(मिश्कात 1/56/36)*

✪ कानों के मसह के लिये नया पानी लेने की आवश्यक्ता नहीं। *(अहादीसे सहीहा)*

✪ फिर अपना दाहिना पाँव टख़नों तक तीन बार धोयें। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ पावँ की उंग्लियों के दर्मियान ख़िलाल करें। (*तिर्मिज़ी*)

✪ गर्दन का मसह करना साबित नहीं।

वुज़ू के बाद की दुआ़

✪ वुज़ू के बाद यह दुआ़ पढ़नी चाहिये:

اَشْهَدُ اَنْ لَّااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (مسلم)

अश'-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू (*मुस्लिम*)

तर्जुमा : "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, और गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।"

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ
مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۔ (ترمذی)

अल्लाहुम्मज्-अ़ल्नी मि-नत्तव्वाबी-न वज्-अ़ल्नी मि-नल् मु-त-तहि्हरी-न (*तिर्मिज़ी*)

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों में से बना दे और ख़ूब पाक-साफ़ रहने वालों में बना दे।"

इन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है

1- गहरी नींद सो जानें से (*अबू दावूद*)

2- हवा ख़ारिज हो जाने से (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

3- मस्ती (यानी नशा में हो जाने) और बेहोशी से (*तिर्मिज़ी, अबू दावूद*)

4- जनाबत से (*सूरः निसा-43*)

5- पैशाब-पाख़ना से (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

6- जिमाअ़ (संभोग, बीवी से हमबिस्तरी करने) से (*सूरः निसा-43*)

7- इस्तिहाज़ा से (*बुख़ारी*)

❁❁❁❁❁❁❁

मोज़ों पर मसह

✪ मुक़ीम आदमी एक दिन और एक रात, और मुसाफ़िर तीन दिन और तीन रात माज़ों (खुफ़्फ़ैन) पर मसह कर सकता है। *(मुस्लिम)*

✪ मसह करने का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथों की पाँचों उँगलियाँ पानी से तर कर के दोनों पाँव के पंजों से शुरू कर के टख़नों के ऊपर तक खींच कर ले जायें।

✪ मसह पाँव के ऊपर करना सुन्नत है, नीचे नहीं। *(अबू दावूद)*

तयम्मुम् का बयान

✪ अगर किसी कारण नमाज़ के समय पानी न मिल सके, या पानी के इस्तेमाल करने से हानि पहुँचने का वास्तव नें डर हो तो पाकी की निय्यत से पाक मिट्टी के साथ अपने हाथों और मुँह पर मलने का नाम "त-यम्मुम्" है।

इसका तरीक़ा यह है कि तयम्मुम की निय्यत से बिस्मिल्लाह कह कर दोनों हाथों को मिट्टी पर मारें, फिर फूँक कर मुँह और दोनों हाथों पर मलें। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

अज़ान का बयान

✪ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि अज़ान के कलिमों को दो-दो बार कहें, मगर शुरू में "अल्लाहु अक्बर" चार मर्तबा कहें। और इक़ामत के कलिमों (शब्दों) को एक-एक बार, मगर आरंभ और अन्त में "अल्लाहु अक्बर" दो-दो बार कहें। और "क़द क़ा-मतिस्सलात" दो बार कहें। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ अज़ान के कलिमात सुन्नत के मुताबिक़ यह हैं।

اَللّٰهُ أَكْبَرْ، اَللّٰهُ أَكْبَرْ،

अल्लाहु अक्-बर् अल्लाहु अक्-बर्

(अल्लाह सब से बड़ा है + अल्लाह सब से बड़ा है)

اَللّٰهُ أَكْبَرْ، اَللّٰهُ أَكْبَرْ

अल्लाहु अक्-बर् अल्लाहु अक्-बर्

(अल्लाह सब से बड़ा है + अल्लाह सब से बड़ा है)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाह + अश्-हदु

अल्लाइला-ह इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं + मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰهِ،

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰهِ،

अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दर्रसूलुल्लाह + अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दर्रसूलुल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के सच्चे सन्देष्टा हैं+ मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के सच्चे सन्देष्टा हैं।)

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ ، حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ

हय्या अ़-लस्सलाह + हय्या अ़-लस्सलाह

(आओ नमाज़ के लिये+आओ नमाज़ के लिये)

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

हय्या अ़-लल् फ़लाह + हय्या अ़-लल् फ़लाह

(आओ नमाज़ के लिये, आओ नमाज़ के लिये)

अल्लाहु अक्-बर अल्लाहु अक्-बर

(अल्लाह सब से बड़ा है + अल्लाह सब से बड़ा है)

اَللّٰهُ أَكْبَرُ+ اَللّٰهُ أَكْبَرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّااللّٰهُ،

लाइला-ह इल्लल्लाह

(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं)

✪ फ़ज्र की नमाज़ में "हय्या अ़-लल् फ़लाह" के बाद दो बार यह कलिमा कहना चाहिये:

اَلصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ اَلصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम्मि-नन्नौम+अस्सलातु ख़ैरुम्मि- नन्नौम

(नमाज़ नींद से बेहतर है+नमाज़ नींद से बेहतर है)

तक्बीर के ताक़ कलिमात

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰه أَكْبَرُ + أَشْهَدُ أَن لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ+اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً رَّسُولُ اللّٰه +حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ+حَيَّ عَلَى الْفَلَاح +قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ،قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ+اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ

أَكْبَرُ + لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ +

अल्लाहु अक्-बर अल्लाहु अक्-बर +अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाह +अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दर्रसूलुल्लाह +हय्या अ़-लस्सलाह+ हय्या अ़-लल् फ़लाह +क़द क़ा-मतिस्सलात, क़द क़ा-म तस्सलाह+ अल्लाहु अक्-बर, अल्लाहु अक्-बर+ लाइला-ह इल्लल्लाह (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

✪ अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के समय काल में अज़ान के कलिमात दो-दो बार और तक्बीर के एक-एक बार कहे जाते थे, मगर "क़द् क़ा-मतिस्सलात" दो बार है। (*अबू दावूद, नसई*)

✪ "हय्या अ़-लस्सलाह" कहते समय दायें तरफ़ और "हय्या अ़-लल् फ़लाह" कहते समय बायें तरफ़ गर्दन मोड़नी चाहिये, लेकिन खुद नहीं घूमना चाहिये। (*फ़त्हुल्बारी 2/115*)

अज़ान का उत्तर

✪ मुअज़्ज़िन जिस प्रकार अज़ान दे उसी प्रकार उत्तर भी देना चाहिये। केवल "हय्या अ़-लस्सलाह" और "हय्या अ़-लल् फ़लाह" पर "लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह" कहना चाहिये। *(मुस्लिम)*

तक्बीर का उत्तर

अज़ान की तरह तक्बीर का भी उत्तर देना चाहिये। केवल "क़द क़ा-मस्सिलात" के उत्तर में "अक़ा-म-हल्लाहु व-अद-म-हा" कहना चाहिये। *(अबू दावूद)*

अज़ान के बाद की दुआ़

✪ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनो तो जैसे वह कहता है, वैसे ही उस को जवाब दो। अज़ान जब ख़तम हो जाये तो मुझ पर दुरूद भेजो। क्योंकि जो शख़्स एक मर्तबा मुझ पर दुरूद भेजेगा, अल्लाह तआ़ला उस पर दस मर्तबा रहमत नज़िल करेगा। *(मुस्लिम)*

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ+اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ+

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद, अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मु-हम्मदिव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्-राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा : या इलाही! रहमत भेज मुहम्मद (सल्लल्लहु अ़लैहि व सल्लम) पर और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की आल पर, जैसे रहमत भेजी तू ने इब्राहीम (अ़लै0) पर और इब्राहीम (अ़लैहि0) की आल पर। बेशक तू प्रशंसा के योग्य और बुजुर्गी वाला है+ या इलाही! बर्कत भेज मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम) की आल पर, जैसे बर्कत भेजी तू ने इब्राहीम (अ़लै0) पर और इब्राहीम (अ़लै0) की आल पर। बेशक तू प्रशंसा के क़ाबिल, बुर्जुगी वाला है।"

✪ दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाद यह दुआ़ पढें :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ
الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ
وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ

1- अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दा-वतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइ-मति आति मु-हम्म-दनिल् वसी-ल-त वल्-फ़ज़ी-ल-त वब्-अ़स्हु मक़ा-मम्महमू-द निल्लज़ी व-अ़त्तहू (*बुख़ारी*)

(ऐ अल्लाह! इस पूरी दुआ़ और खड़ी रहने वाली नमाज़ के रब! अ़ता कर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को वसीला (यानी जन्नत का दर्जा) और बुज़ुर्गी, और उनको उस महमूद स्थान पर भेज जिस का तूने वा़यदा किया है)

✪ जो शख़्स इस दुआ़ को पढ़ेगा उसको शफ़ाअ़त क़ियामत के दिन हासिल होगी।

أَشْهَدُ أَن لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ +رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّ بِالْإِسْلَامِ دِيْنًا۔

2– अश्–हदु अल्लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू व–अश्–हदु अन्न मु–हम्म–दन् अ़ब्दुहू व–रसूलुहू + रज़ीतु बिल्लाहि रब्बव्वबि मु–हम्मदिन् रसू–लव्व बिल्इसलमि दीना (*मुस्लिम*)

तर्जुमा : मैं गवाही देता हूँ कि अल्ला के अ़लावाह कोई माबूद नहीं, वह अकेलां है, उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उस के बन्दे और रसूल हैं+ मैं राज़ी हूँ अल्लाह के रब होने पर और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के रसूल होने पर और इस्लाम के दीन होने पर) (*मुस्लिम*)

✪ इन तीनों दुआ़ओं, यानी दुरूद शरीफ़ और ऊपर की दोनों दुआ़ओं का पढ़ना अफ़्ज़ल हैं।

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़

✪ मस्जिद में अपना दाहिना पाँव रख कर यह दुआ़ पढ़नी चाहिये :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्मफ़्-तह्ली अब्वा-ब रह-मति-क (ऐ अल्लाह! मेरे लिये अपनी रहमत के दर्वाज़े खोल दे) *(मुस्लिम)*

मस्जिद से निकलने की दुआ़

✪ मस्जिद से निकलने के समय पहले बायाँ पाँव बाहर निकालना चाहिये, फिर यह दुआ़ पढ़नी चाहिये:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल माँगता हूँ)

नमाज़ का मस्नून तरीक़ा

✪ नमाज़ आरम्भ करने से पहले सीधे क़िबला की तरफ़ मुँह कर के खड़ा होना चाहिये। *(बुख़ारी)*

✪ और (दिल में) नमाज़ की निय्यत करनी चाहिये। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ अपने दोनों हाथों को कन्धों या कानों के बराबर उठा कर "अल्लाहु अक्-बर" कहना चाहिये। हाथों का "अल्लाहु अक्-बर" के साथ और उस के बाद भी उठाना जाइज़ है। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ और दाहिना हाथ, बायें-हाथ पर अपने सीने पर रख कर बाँधना चाहिये। *(सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा)*

✪ फिर आहिस्ता से यह दुआ़ पढ़नी चाहिये।

इस्तिफ़्ताह (सना) की दुआ़

✪ "तक्बीरे तहरीमा" के बाद क़िरात शुरू करने से पहले यह दुआ़ पढ़नी चाहिये:

اَللّٰهُم بَاعِدْ بَيْنِى وَبَيْنَ خَطَايَایَ كَمَا بَاعَدْتَّ
بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اَللّٰهُمَّ نَقِّنِى مِنَ
الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّ الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ،
اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَایَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرْدِ

अल्लाहुम्म बाअ़िद बैनी वबै-न ख़ताया-य कमा बा-अ़त्त बै-नल् मश्रिक़ि वल् मग़रिबि अल्लाहुम्म

नक़्क़िनी मि-नल् ख़तांया कमा यु-नक़्क़स्सौबुल् अब्-यजु मि-नद्द-नसि, अल्लाहुम्मग़्सिल् ख़ताया-य बिल् माइ वस्सल्जि वल् ब-रदि

(बुख़ारी, मुस्लिम)

(ऐ अल्लाह! मैं और मेरी ख़ताओं के दर्मियान ऐसी दूरी कर दे जैसी पूरब और पश्चिम के दर्मियान तू ने दूरी की है। ऐ अल्लाह! मुझे ख़ताओं से इस प्रकार साफ़ कर दे जिस प्रकार सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मेरी ख़ताओं को पानी, बर्फ़ और ओले से धो दे)

✪ या यह दुआ पढ़े :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि-हम्दि-क व-तबा-र-कस्मु-क व-तआ-ल जद्दु-क वला इला-ह ग़ैरु-क *(अबू दावूद)*

✪ फिर पढ़े أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

इस के बाद بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मस्अला :- जेहरी नामज़ों में "बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम" का बुलन्द आवाज़ से और सिंरी नमाज़ों में चुपके से पढ़ना साबित है। अगर हर नमाज़ में चुपके से पढ़ें तब भी जाइज़ है। *(नसई)*

✪ हर नमाज़ में "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर सूर: "फ़ातिहा" पढ़नी चाहिये। और फ़र्ज़, सुन्नत, नफ़्ल की हर रकअ़त में इमाम और मुक़तदी और मुनफ़रिद (अकेला पढ़ने वाला) सब के लिये सूर: फ़ातिहा का पढ़ना फ़र्ज़ है, इसके बग़ैर नमाज़ नही होती। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

सूर: फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا
الضَّآلِّيْنَ۔

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमीन् ★

अर्रह्मानिर्रहीम् ★ मालिकि यौमिद्दीन् ★ इय्या-क नअ़्बुदु वइय्या-क नस्-तअ़ीन् ★ इहदि-नस्सिरा-तल् मुस्-तक़ीम् ★ सिरा-तल्लज़ी-न अन्-अ़म्-त अ़लैहिम् ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अ़लैहिम् व-लज़्ज़ाल्लीन् ★

तर्जुमा : "तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो समस्त मुख़्लूक़ का पालनहार है। जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। जो बदले के दिन का मालिक है। हम तेरी ही अ़िबादत करते और तुझ ही से साहायता चाहते हैं। हम को सीधा रास्ता दिखला। उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इनाम फ़रमाया है, न कि उन लोगों का रास्ता जिन पर तेरा ग़ज़ब किया गया, और न उन लोगों का जो गुमराह हुये।"

✪ बुलन्द आवाज़ से क़िरात वाली नमाज़ हो तो "व-लज़्ज़ाल्लीन" पर इमाम और मुक़्तदी आवाज़ खींच कर ज़ोर से "आमीन" कहें। *(तिर्मिज़ी, अबू दावूद)*

✪ और सिर्री नमाज़ हो तो चुपके से कहें। इस के बाद कुरआन की जो भी सूरत या आयत आसान मालूम हो, इमाम जेहरी नमाज़ में ज़ोर से आर सिर्री नमाज़ में चुपके से पढ़े। *(बुख़ारी)*

सूरः "इख़्लास"

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ + اَللّٰهُ الصَّمَدُ + لَمْ يَلِدْ

وَلَمْ يُولَدْ + وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُواً اَحَدٌ +

कुल् हु-वल्लाहु अ-हद्+अल्लाहुस्स-मद्+लम् यलिद् व-लम् यू-लद्+व-लम् य-कुल्लहू कुफु-वन् अ-हद्+

तर्जुमा ः "कह दो (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। उस की औलाद नहीं, और न वह किसी की औलाद है। और न कोई उस के बराबर का है।"

रुकूअ़ का बयान

✪ क़िरात के बाद रुकूअ़ करना चाहिये। रुकूअ़ में निम्न आदाब का ख़्याल रखना चाहिये।

रुकूअ़ करते समय "अल्लाहु अक्-बर" कह कर रफ़ायदैन करें, दोनों हाथ मोंढों तक उठायें।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

✪ रुकूअ़ में पीठ बिल्कुल सीधी रखें, इस प्रकार कि सर, पीठ से नीचा हो और न ऊँचा हो। और दोनों हाथों की हथेलियाँ दोनों घुटनों पर रखें। (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

✪ उंग्लियाँ घुटनों पर कुशादा रखें। (*इब्ने ख़ुज़ैमा*)

✪ हाथ को सीधा तानें और पहलू से अलग रखें, और घुटनों को मज़बूत पकड़ें।

रुकूअ़ की दुआ़यें

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

1- सुब्हा-न रब्बि-यल् अ़ज़ीम (तीन मर्तबा)
(पाक है मेरा बड़ाई वाला पर्वरदिगार)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ

2-सुब्हा-न-कल्लाहुम्म रब्बना वबि-हम्दि-क अल्लाहुम्मग् फ़िर् ली (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

क़ौमा की दुआ़यें

✪ रुकूअ़ से सर उठाते हुये रफ़ा+यदैन करें और सीधे खड़े हो जायें। मुसल्ली (यानी नमाज़ पढ़ने वाला) अगर इमाम है तो कहे :

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

1- समि-अ़ल्लाहु लि-मन् हमि-दह्

(अल्लाह ने उस की दुआ़ सुन ली) जिस ने उस की तारीफ़ की)

رَبَّنَاوَلَكَ الْحَمْدُ

2- रब्बना व-ल-कल्-हम्दु (*बुख़ारी*)

✪ और अगर मुक़तदी है तो कहे :

रब्बना ल-कल् हम्दु हम्-दन् कसी-रन् त़य्यि-बन् मुबा-र-कन् फ़ीहि (*बुख़ारी*)

(ऐ हमारे रब! तेरे ही लिये तारीफ़ है, बहुत ज़्यादा तारीफ़ पाकीज़ा उस में बर्क़त दी गयी)

✪ अगर अकेला यानी तन्हा हो, तो इमाम की तरह दोनों दुआ़यें पढ़े।

सज्दा का बयान

✪ रुकूअ़ से सज्दा में जाते समय ज़मीन पर पहले दोनों हाथों को रखें, इसके बाद घुटनों को। (*अबू दावूद*)

✪ सज्दा में नाक, पेशानी और दोनों हाथ ज़मीन पर टिक जायें, इस प्रकार कि हाथ पहलू से दूर रहें। (*बुख़ारी*)

✪ सीना, पेट और रानें जमीन से ऊँची रखें। (*अबू दावूद*)

✪ सज्दा में सात हिस्सों का ज़मीन पर होना आवश्यक है (1) पेशानी (2,3) दोनों हाथ (4,5) दोनों घुटने (6,7) दोनों क़दम के पंजे। (*बुख़ारी, मुस्लिम*)

✪ सज्दा की यही कैफ़िय्यत और तरीक़ा मर्द-औ़रत (पुरुष-महिला) दोनों के लिये है। महिला के लिये अलग तरीक़ा सज्दा का साबित नही।

सज्दा की दुआ़यें

سُبْحَانَ رَبِّيَ الاَعْلٰى

1- सुबहा-न रब्बि-यल् आला (*तिर्मिज़ी*)

(पाक है मेरा पर्वरदिगार) (तीन मर्तबा)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ

2- सुब्हा-न-कल्लाहुम्म रब्बना वबि-हम्दि-क

अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली

(पाक है तू ऐ अल्लाह! हमारे रब, हम तेरी हम्द करते हैं। ऐ अल्लाह मुझ को बख़्श दे)

(बुख़ारी, मुस्लिम)

जल्सा की दुआ़

✪ पहले सज्दा से सर उठा कर बायाँ पाँव बिछा कर उस पर बैठ जायें और दायाँ पाँव खड़ा रखें और दाहिना हाथ, दाहिनी रान पर और बायाँ हाथ बायीं रान पर इस प्रकार रखें कि उँगलियाँ क़िब्ला की तरफ़ और घुटने के क़रीब हों। (नसई)

✪ **और यह दुआ़ पढ़ें :**

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ

अल्लाहुम्मग़् फ़िर ली वर्-हम्नी वआ़फ़िनी वह्दिनी वर्ज़ुक़्नी

(ऐ अल्लाह! मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रहम कर और मुझे अम्न व शान्ति दे और मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी दे।) (*तिर्मिज़ी*)

✪ दूसरे सज्दा से उठ कर जब दूसरी अथवा चौथी रकअ़त के लिये खड़ा होना हो तो "जल्स-ए-इस्तिराहत" करना चाहिये। (बुख़ारी)

✪ जल्स-ए-इस्तिराहत के बाद दूसरी अथवा चौथी रकअ़त के लिये और पहले क़ादा के बाद तीसरी रकअ़त के लिये उठने के समय पहले दोनों घुटनों को ज़मीन से उठायें, फिर दोनों हाथों को। (बुख़ारी)

तशहहुद की दुआ़

✪ पहले क़ादा में "जल्स-ए-इस्तिराहत" ही की तरह बैठ कर यह दुआ़ पढ़ें :

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ
عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ + اَشْهَدُ اَنْ
لَّااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-लवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लै-क अय्यु-हन्नबिय्यु व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू अस्सलामु अ़लैना व-अ़ला अ़िबादिल्लाहि स्सालिही-न, अश्-हदु अल्लाइला-ह

इल्लल्लाहु व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू

तर्जुमा : "हर प्रकार की हम्द व सना और नमाज़ें और पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह के लिये हैं। ऐ नबी! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उस की बर्कत नाज़िल हो। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर+ मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नही, और गवाही देता हूँ कि निःसन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

✪ पहले और दूसरे क़ादा में अत्तहिय्यात पढ़ते समय दायें हाथ की उंग्लियों को मोड़ कर कलिमा की उंग्ली को खुली रख कर उस से इशारा करना चाहिये। तीन और चार रकअ़त वाली नमाज़ों में पहले क़ादा से उठने के बाद रफ़ायदैन करना चाहीये। *(बुख़ारी)*

✪ फ़र्ज की तीसरी और चौथी रकअ़तों में केवल सूरः फ़ातिहा पढ़नी चाहिये। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

अन्तिम क़ादा

✪ अन्तिम क़ादा में बैठने का तरीक़ा यह है कि दायाँ पाँव क़िब्ला की तरफ़ कर के खड़ा रखा जाये और बायें पाँव को दायें तरफ़ निकाला जाये और बायीं तरफ़ की सुरीन (चूतड़) को ज़मीन पर रख कर बैठा जाये। (*बुख़ारी*) इस प्रकार बैठने को "त-वर्रु-क" कहते हैं।

✪ फिर त-शह्हुद के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़े:

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ+ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ+

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद +अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मु-हम्मदिव्व-अ़ला आ़लि

मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राहीम-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल कर मुहम्मद और आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर, जैसे रहमत नाज़िल की तूने इब्राहीम (अ़लै0) और आले इब्राहीम (अ़लै0) पर। बेशक तू प्रशंसा के योग्य और बुर्ज़गी वाला है + ऐ अल्लाह! बर्कत नाजि़ल फ़रमा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर, जिस प्रकार तू ने बर्कत नाज़िल की इब्राहीम और आले इब्राहीम (अ़लै0) पर। बेशक तू प्रशंसा के लाइक़ और बड़ाई वाला है।" (बुख़री, शरीफ़)

दुरूद शरीफ़ के बाद की दुआ़यें

اَللّٰهُمَّ اِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِي مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

1. अल्लाहुम्म इन्नी ज़-लमतु नफ़सी ज़ुल्-मन् कसी-रन् वला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त फ़ग़्फ़िर् ली मग़्फ़ि-र-तम्मिन् ज़िन्दि-क वरहम्नी, इन्न-क अन्-तल् ग़फ़ूरुर्रहीम्+

तर्जुमा : "मैं ने अपनी जान पर बड़ा अत्याचार किया है और तेरे अलावा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं, सो तू ही अपने विशेष फ़ज़्ल से मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा। बेशक तू बख़्शने वाला, रहम करने वाल है।" *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَ
اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ الْمَمَاتِ،
اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَأْثِمِ وَمِنَ الْمَغْرَمِ

2- अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि व-अऊ़ज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिल् मसीहिद्दज्जालि व-अऊ़ज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिल्

महया वफ़ित्-नतिल् म-माति, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् मअ्-सिमि वल्-मग़्-रमि

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! तेरी पनाह चाहता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से और तेरी पनाह चूहता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ितने से, और पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ गुनाह (पाप) और क़र्ज़ से।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

✪ फिर दाहिनी ओर मुँह कर के कहें :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम् व-रह्-मतुल्लाहि

(सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम् व-रह्-मतुल्लाहि

(सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो)

❁❁❁❁❁❁❁

सलाम के बाद की दुआयें और ज़िक्र

✪ सलाम फेरने के बाद इमाम और मुक़्तदी को चाहिये कि ऊँचे स्वर से "अल्लाहु अक्बर" कहें (*बुख़ारी, मुस्लिम*) और तीन मर्तबा اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ कहें। फिर यह दुआ़ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ
يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

अल्लाहुम्म अन्-तस्सलामु वमिन्-कस्सलामु तबा-रक्-त या ज़ल्जलालि वल् इक्रामि

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! तू सरापा सलामती है और सलामती तुझी से क़ाइम है, तू बहुत ही बर्कतों वाला है ऐ अिज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाले पर्वरदिगार।"

(*मुस्लिम शरीफ़*)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ،
وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ+
اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِىَ لِمَا
مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّمِنْكَ الْجَدُّ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+ अल्लाहुम्म ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त वला मोति-य लिमा म-नअ़-त वला यन्-फ़ऊ ज़ल्-जद्दि मिन्-कल् जद्दु+

तर्जुमा : "अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही। वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं। उसी के लिये बादशाहत और उसी के लिये सब तारीफ़ है और वह हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला है। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू दे उस को कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक दे उस को कोई देने वाला नहीं और माल वाले को उस का माल तेरे अ़ज़ाब से फ़ाइदा न देगा।" *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَرْذَلِ الْعُمُرِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ ـ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् जुब्नि व-अऊज़ुबि-क मि-नल् बुख़्लि व-अऊज़ुबि-क मिन् अर-ज़लिल् उमुरि व-अऊज़ुवि-क मिन् फ़ित्- नतिद्दुन् या व-अ़ज़ाबिल् क़बरि

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! तेरी पनाह चाहता हूँ बुज़दिली से और तेरी पनाह चाहता हूँ कंजूसी से और तेरी पनाह चाहता हूँ सठिया जाने से और तेरी पनाह चाहता हूँ दुनिया एँव क़ब्र के दन्ड से।"

(बुख़ारी)

✪ ऊपर की दुआ़ओं के अ़लावा 33 मर्तबा سُبْحَانَ اللهِ और 33 मर्तबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और 34 मर्तबा "अल्लाहु अक्बर" और एक मर्तबा :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَئٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर *(मुस्लिम शरीफ़)*

✪ इन दुआ़ओं के बाद अन्त में "आ-यतुल् कुर्सी" पढें :

आ-यतुल् कुर्सी

اَللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ

سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِ

ذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ

وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ

حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-व अल्-हय्युल् क़य्यूमु ला तअ़ख़ुजुहू सि-नतुव्वला नौमुन् लहू मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्-फ़उ़ अ़िन्-दहू इल्ला बिइज़्निही यअ़्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् वमा ख़ल्-फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम्मिन् अ़िल्मिही

इल्ला बिमा शा-अ, वसि-अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्- अर्-ज़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहु-वल् अ़लिय्युल् अ़ज़ीम (सूर: ब-क़-र: 255)

तर्जुमा : "अल्लाह के अ़लावा और कोई माबूद नही, वह सदा जीवित रहने वाला, समस्त को क़ाइम रखने वाला है। उस को न तो ओंघ आती है और न ही नींद। आकाश और ज़मीन की समस्त वस्तुयें उसी की हैं। कौन है जो उस के पास किसी की सिफ़ारिश करे उस की अनुमति के बिना। वह जानता है जो लोगों के सामने है और उन के पीछे है। और लोग उस के अ़िल्म में से कुछ घेर नही सकते मगर जितना वह चाहे। और उस की कुर्सी ने आकाश और पृथवी को अपने घेरे में ले रखा है और उन की सुरक्षा उस को थकाती नहीं। और वह बुलन्द और बड़ाई वाला है।"

(नसई -अ़-मलुल् यौमि वल्लै-लति)

वित्र की नमाज़

✪ वित्र की नमाज़ एक रक्अ़त या एक क़ादा के साथ तीन रक्अ़त पढ़नी चाहिये। वित्र रात की अन्तिम नमाज़ है।

वित्र की दुअ़-ए-कुनूत

✪ वित्र की अन्तिम रकअ़त में रुकूअ़ के बाद कुनूत की यह दुआ़ पढ़नी चाहिये :

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِىْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِىْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِىْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِىْ فِيْمَا اَعْطَيْتَ، وَقِنِىْ شَرَّ مَا قَضَيْتَ، فَاِنَّكَ تَقْضِىْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ، اِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ، وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ، نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ۔

अल्लाहुम्मह् दिनी फ़ी-मन् हदे-त, वआ़फ़िनी फ़ी-मन् आ़फ़ै-त, व-त-वल्लनी फ़ी-मन् त-वल्लै-त, वबारिक् ली फ़ीमा आतै-त, वक़िनी

श-र्र मा क़ज़ै-त, फ़इन्न-क तक़ज़ी वला युक़ज़ा अ़लै-क, इन्नहू ला यज़िल्लु मव्वालै-त, वला यअ़िज़्ज़ु मन् आ़दै-त, तबा-रक्-त रब्बना व-तआ़लै-त, नस्-तग़्फ़िरु-क व-नतूबु इलै-क+

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! मुझ को हिदायत दे उन लोगों की जमाअ़त में जिन को तू ने हिदायत दी। और अम्न व शन्ति दे मुझको उन में जिन को तूने शान्ति दी। और दोस्त रख मुझ को उन लोगों में जिन को तू ने दोस्त रखा। और बर्कत दे मुझ को उस नेमत में जो तू ने मुझे दी। और सुरक्षित रख मुझ को उस बुराई से जिस का तू ने फ़ैसला किया है। तू ही फ़ैसला करता है, तेरे ऊपर किसी का फ़ैसला नही होता। जिस को तू दोस्त रखे उस को कोई ज़लील करने वाला नही, और जिस को तू दुश्मन बना ले उसे कोई अ़िज़्ज़त देने वाला नही। ऐ हमारे रब! तू बर्कत वाला और सब से बुलन्द है। हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं और तुझ से तौबा करते हैं। (*तिर्मिज़ी*)

वित्र के बाद का ज़िक्र या दुआ़

✪ वित्र का सलाम फेरने के बाद तीन मर्तबा कहना चाहिये

سُبحَانَ المَلِكِ القُدُّوسِ

सुब्हा-नल् मलिकिल् कुद्दूस

✪ तीसरी बार आवाज़ बुलन्द करते हुये खींच कर कहें (अबू दावूद)

कुनूते नाज़िला

✪ लड़ाई, डर और दुश्मन के आक्रमण के समय इस दुआ़ को कुनूत में पढ़ना चाहिये। इस को "कुनूति नाज़िला" कहते हैं।

اَللّٰهُمَّ اغفِرلَنَا وَلِلمُومِنِينَ وَالمُئومِنَاتِ
وَالمُسلِمِينَ وَالمُسلِمَاتِ وَاَلِّفْ بَينَ قُلُوبِهِم
وَاَصلِح ذَاتَ بَينِهِم وَانصُرهُم عَلٰى عَدُوِّكَ
وَعَدُوِّهِم +اَللّٰهُمَّ العَنِ الكَفَرَةِ الَّذِينَ

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ وَيُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ اَوْلِيَآئَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ و اَنْزِلْ بِهِمْ بَاْسَكَ الَّذِىْ لَا تَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ+ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ-

अल्लाहुम्मग़् फ़िर् लना वलिल् मुअ्मिनी-न वल् मुअ्मिनाति वल् मुस्लिमी-न वल् मुस्लिमाति, व-अल्लिफ़् बै-न कुलूबिहिम् व-अस्लिह् ज़ा-त बैनिहिम् वन्सुरहुम् अ़ला अ़दुव्वि-क व-अ़दुव्विहिम् +अल्लाहुम्मल्-अ़निल् क-फ़-र-तल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलि-क वयु-कज़्ज़िबू-न रुसु-ल-क वयुक़ातिलू-न औलिया-अ-क+ अल्लाहुम्म ख़ालिफ़् बै-न कलि-मतिहिम् व-ज़ल्ज़िल् अक़्दा-महुम् व-अन्ज़िल् बिहिम् बअ्-स-कल्लज़ी ला तरुद्दुहू अ़निल् क़ौमिल् मुज्रिमीन्+अल्लाहुम्म इन्ना नज्-अ़लु-क फ़ी

नुहूरिहिम् व-नऊजुबि-क मिन् शुरूरिहिम्+

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! बख़्श दे हम को और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली महिलाओं को, और मुसलमान मर्दों और मुसलमान महिलाओं को। और उन के दिलों के दर्मियान प्रेम पैदा कर दे और उन के दर्मियान सुल्ह-समझौता करा दे, और अपने और उन के दुश्मनों पर उन की सहायता फ़रमा। ऐ अल्लाह! उन काफ़िरों पर लानत फ़रमा जो तेरी राह से रोकते और तेरे सन्देष्टाओं को झुठलाते हैं, और तेरे मित्रों से जन्ग करते हैं। ऐ अल्लाह! उन के दर्मियान फूट डाल दे और उन के पाँव को डगमगा दे, और उन पर अपना प्रकोप उतार जिस को तू मुजरिमों से नहीं लौटाता। ऐ अल्लाह! हम तुझ को उन के मुक़ाबला में करते हैं और उन की बुराई से तेरी पनाह चाहते हैं) (*हिस्ने हसीन*)

★★★

नमाज़ के कुछ आवश्यक मसाइल

1- जमाअ़त के साथ नामज़ पढ़ना 27 दर्जा अफ़्ज़ल है। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

2- इमाम के साथ एक आदमी भी हो तो जमाअ़त हो सकती है। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

3- सफ़ों को सीधी करने से नमाज़ मुकम्मल होती है। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

4- सफ़ों के दर्मियान जगह ख़ाली नही छोड़नी चाहिये। *(अबू दावूद)*

5- मुसाफ़िर, चार रक्अ़त वाली नमाज़ को क़स्र कर के आधी पढ़े। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

6- सफ़र में दो वक़्त की नमाज़ इक्ट्ठी पढ़नी जाइज़ है। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

7- नमाज़ी, भूल कर नमाज़ कम या अधिक पढ़ ले तो सज्द-ए-सह्व करना सुन्नत है। कमी की सूरत

में, कमी को पूरी करने के बाद सज्द-ए-सह्व करना चाहिये।

8- सज्द-ए-सह्व सलाम फेरने से पहले करना चाहिये। *(बुख़ारी)*

जुम्अ़: का बयान

✪ जुमा की नमाज़ दो रकअ़त फ़र्ज़ है। जुमा का समय जुह् का समय है। *(बुख़ारी)*

✪ देहात और शह्र हर स्थान पर जुमा फ़र्ज़ है।जुमा का खुत्बा वाजिब है। जुमा के दिन खुत्बा से पहले जितनी चाहें सुन्नतें पढ़ें। जुमा के बाद चार रकअ़त सुन्नत पढ़नी चाहिये। *(मुस्लिम)*

✪ जो शख़्स अज़ान के बाद मस्जिद में आये और इमाम खुत्बा दे रहा हो तो उस को दो रकअ़त पढ़ कर खुत्बा सुनना चाहिये। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

ई़दैन की नमाज़ का बयान

✪ ई़दैन औ़र नमाज़ केवल दो रकअ़त सुन्नते मुअक्कदा है। ई़दैन की नमाज़ सुब्ह-सवेरे दिन निकलते

ही पढ़ लेनी अफ़ज़ल है। ओ़ैदैन की नमाज़ के लिये न अज़ान कहनी चाहिये न इक़ामत। *(बुख़ारी, मुस्लिम)*

✪ ओ़ैदैन की पहली रकअ़त में तक्बीरे तहरीमा के बाद सात तक्बीरें, और दूसरी रकअ़त में क़िरात से पहले 5 तक्बीरें कहनी चाहिये। *(अबू दावूद)*

✪ हर तक्बीर के साथ रफ़ायदैन करना जाइज़ है। ओ़ैदैन की नमाज़ से पहले और बाद में (ओ़ैदगाह में) कोई सुन्नत और नफ़्ल नही पढ़नी चाहिये।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

ओ़ैदैन की तक्बीरें

✪ ओ़ैदगाह को जाते और वापस आते हुये ऊँची आवाज़ से यह तक्बीर पढ़ते रहें :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ + لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ،

وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ + وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अक्-बर अल्लाहु अक्-बर, लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्-बर अल्लाहु अक्-बर वलिल्लाहिल् हम्दु

तर्जुमा : "अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह के अ़लावा और कोई माबूद नहीं। अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है।"

(इरवाउल ग़लील्)

जनाज़ा की नमाज़ का बयान

✪ जनाज़ा की नमाज़ के लिये और दूसरी नमाज़ों की तरह पाकी, वुज़ू, क़िब्ला की तरफ़ मुँह, सतर (शर्मगाह) का पोशीदा होना और नियत अनिवार्य है। जनाज़ा में चार तक्बीरें कहनी .चाहिये। जनाज़ा की नमाज़ में सूरः फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी है। (बुख़ारी)

नमाज़े जनाज़ा की दुआ़ और र्तकीब

✪ पहली तक्बीर के बाद सूरः फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरः मिला कर पढ़नी चाहिये। (बुख़ारी, नसई)

✪ दूसरी तक्बीर के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये।

✪ तीसरी तक्बीर के बाद नीचे की दुआ़यें पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا

وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَ ذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ

اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ

مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا

اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ ـ

1) अल्लाहुम्मग़् फ़िर् लि-हय्यिना व-मय्यितिना व शाहिदिना वग़ाइबिना व-सग़ीरिना व-कबीरिना व-ज़- करिना वउन्साना+अल्लाहुम्म मन् अह्यै-तहू मिन्ना फ़- अह्यिही अ़-लल् इस्लामि व-मन् त-वफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़-त-वफ़्फ़हू अ़-लल् ईमानि+अल्लाहुम्म ला तह्रिम्ना अज्-रहू वला तफ़तिन्ना बअ़्-दहू+

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! बख़्श दे हमारे जिन्दा को और हमारे मुर्दा को, और हमारे हाज़िर को और हमारे ग़ाइब को, और हमारे छोटे को और हमारे बड़े को। और हमारे मर्द को और हमारी महिला को। ऐ अल्लाह! हम में से तू जिस को जीवित रखे उस

को इस्लाम पर जीवित रख, और जिस को तू हम में से वफ़ात दे उस को ईमान पर वफ़ात दे। ऐ अल्लाह हम को उस के सवाब से वन्चित न रखाना और उस के बाद हम को आज़माइश में न डालना) (अबू दावूद)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ وَارْحَمْهُ وَعَافِهٖ وَاعْفُ عَنْهُ

وَاَكْرِمْ نُزُلَهٗ وَوَسِّعْ مَدْخَلَهٗ وَاغْسِلْهُ بِالْمَآءِ

وَالثَّلْجِ وَالْبَرْدِ وَنَقِّهٖ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ

الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ دَاراً

خَيْراً مِّنْ دَارِهٖ وَ اَهْلاً خَيْراً مِّنْ اَهْلِهٖ

وَزَوْجاً خَيْراً مِنْ زَوْجِهٖ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ

وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ۔

❁❁❁❁❁

2) अल्लाहुम्मग़्फ़िर् लहू वर्-हम्हु व आफ़िही वाफ़ु अन्हु व-अक्रिम् नुज़ु-लहू व-वस्सिअ् मद्-ख़-लहू वग़्सिल्हु बिल्माई वस्सल्जि वल्-ब-रदि व-नक़्क़िही मि-नल् ख़ताया कमा नक़्क़ै-तस्सौ-बल् अब्-य-ज़ मि-नद्द-नसि+ व- अब्दिल्हु दा-रन् ख़ै-रन् मिन् दारिही व-अह्-लन् ख़ै-रम्मिन् अह्लिही वज़ौ-जन् ख़ै-रम्मिन् ज़ौजिही व-अद्ख़िल् हुल् जन्न-त व-अइज़्हु मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि व-अज़ाबिन्नारि+

तर्जुमा : "ऐ अल्लह! उस को बख़्श दे और उस पर रहम फ़रमा और उस को शन्ति दे और उस को माफ़ कर, और उस की मेहमानी इ़ज़्ज़त के साथ कर, और उस की क़ब्र को कुशादा कर दे और उस के पापों को पानी, बर्फ़ और ओले से धो दे, और उस को ग़लतियों से इस प्रकार साफ़ कर दे जिस प्रकार तूने सफ़ेद कपड़ा साफ़ किया। और उस के घर से अच्छा घर बदले में दे दे, और उस के घर वालों से अच्छे घर वाले बदले में दे। और उस की पत्नी से अच्छी पत्नी बदले में दे, और उस को

स्वर्ग में दाख़िल फ़रमा, और उस को क़ब्र के दन्ड से और जहन्नम के दन्ड से बचा।

✪ अगर बच्चा का जनाज़ा हो तीसरी तक्बीर के बाद "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا ----- " के बाद नीचे की दुआ़ पढ़ी जाये :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفاً وَّ فَرَطاً وَّاَجْراً

अल्लाहुम्मज्-अ़ल्हु लना स-ल-फ़व्व-फ़-र--तव्व- अज्-रन्

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! उसको हमारे लिये आगे चलने वाला और पहले से सामान करने वाला और सवाब का ज़रीआ़ बना दे।" (*बुख़ारी*)

✪ मर्द का जनाज़ा हो तो इमाम को मय्यित के सर के सामने खड़ा होना चाहिये, और अगर महिला का जनाज़ा हो तो जनाज़ा के बीच के हिस्सा के सामने खड़ा होना चाहिये। (*अबू दावूद*)

★★★★★

अनुवादक: ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी

G. T. C.

अह्कामुल् जनाइज़

लेखक

अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी

अनुवादक

खालिद हनीफ सिद्दीकी

प्रकाशक

अद्-दारुस्सलफिय्या

मुम्बई